मनुष्य का मनोविज्ञान ही आतंकवाद की जड़

डॉ. गोपाल सिंह
व्याख्याता राजनीति विज्ञान
राज0महाविधालय– शिवगंज(सिरोही)

अपमान की खाद हो, नफरत की मिट्टी और समर्थन रूपा पानी की बूंदे हो तो एक छोटे से उद्देश्य की जड़ पर आतंकवाद का छोटा सा पौधा देखते ही देखते एक वट वृक्ष बन जाता हैं। हमें पता ही नहीं लगता और खून के एक–एक कतरे में आक्रोश भर जाता है। दिल में उसे समाहित रखे रहने की ताकत और हिम्मत नहीं बची रहती। ऐसे में जो ज्वालामुखी फूटता है उसे खुद अपने स्वरूप और अन्दर की विनाशकारी शक्तियों का अंदाजा नही होता और वह इतनी तबाही मचाता है कि समाज, उसी मर्यादाएँ और कायदे कानून कुछ भी उसको सीमित नहीं रख सकते।

कहीं पर आतंकवाद ऐतिहासिक अन्याय की प्रतिक्रिया स्वरूप पैदा होता है। जैसे इजराइल में, कहीं पर राज्य की तानाशाही एवं शोषण–दमन की प्रतिक्रिया में उपभरता है। जैसे लेटिन अमेरिका एवं अफ्रीकी देशों में होने वाली तख्तापलट घटनाओं में या भारत में 'नक्सली' एवं 'पीपुल्स वार ग्रुप' आन्दोलन के रूप में, कहीं पर यह संकीर्ण धर्मांगधता ओर जातीयता का रूप धारण कर लेता है जैसे ओसामा–बिन–लादेन के 'अलकायदा' संगठन या कश्मीरी आंतकवादी 'लश्कर–ए–तयबा' या 'जैश–ए–मोहम्मद' आदि समूहों में।

धर्मान्तरण और आरक्षण नीति ने समाज के कमजोर वर्गों के आत्म–विश्वास को खोखला कर दिया है। कोई भी स्वाभिमानी समुदाय दूसरों की मदद नहीं चाहता, ये लोग सिर्फ समान शर्तों पर शिक्षा, न्याय और रोजगार तक अपनी पहुँच बढ़ाना चाहते हैं।

पंजाब, असम, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम, नागालैण्ड में ऐसा हुआ। ऐसा ही कश्मीर में हो रहा है। हमें आतंक को भड़काने के लिए विदेशी मुजाहिदीन की जरूरत नहीं है। हम खुद ही इस दिशा में बेहतर काम कर रहे हैं।[1]

किसी भी विद्रोह, क्रांति या आंदोलन की शुरूआत के भिन्न–भिन्न कारण होते हैं। मानव हिंसा का सहारा तब लेता है, जब उसका शोषण इस कदर हो गया होता है कि उसका रोम–रोम दहकने लगता है। अतः यह कहना अनुचित नहीं होगा कि मूलतः बदलते परिवेश में आतंकवाद राष्ट्रीए सीमाएँ लाँघकर आगे चला गया है और 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका में न्यूयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हुआ हमला इसका ज्वलत उदाहरण है। इसलिए हम राष्ट्रीय कारणों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय कारणो की समीक्षा किये बिना किसी निर्णायक स्थिति में नहीं पहुँच सकते।[2]

आर्थिक कारण :–

जैसे – जैसे मनुष्य उन्नति कर रहा है और विज्ञान पर निर्भर होता जा रहा है वैसे – वैसे उसकी जरूरत और इच्छाएँ बढ़ती जा रही है। आवश्यकताओं की तुलना में धन सम्पदा नहीं बढ़ती और असंतोष पनपता है और यह एक बहुत बड़ा कारण बन जाता है।[3] जिसके द्वारा आतंकवाद की उत्पत्ति ही नहीं होती, इसको बढ़ावा भी मिलता है। इसके निम्न कारण आथ्रिक स्तर पर हैं–

- ✔ **गरीबो।**
- ✔ **धन – सम्पत्ति के स्वामित्व में भारी अन्तर।**
- ✔ **अतिभोगवाद।**
- ✔ **उद्योगों की कमी ।**
- ✔ **बेरोजगारी।**
- ✔ **एक विशेष क्षेत्र का पिछड़ापन।**

- ✔ **एक सम्प्रदाय, जाति, धर्म–समूह आदि का आर्थिक पिछड़ापन।**
- ✔ **एक विशेष वर्ग का आर्थिक शोषण, जमीदारी प्रथा, बंधुआ मजदूरी आदि।**
- ✔ **राष्ट्र को कमजोर मुद्रा।**
- ✔ **नकली मुद्रा का प्रचलन ।**
- ✔ **बाहरी आर्थिक मदद का आसानी और अधिकता से मिलना।**
- ✔ **आर्थिक अपराधों को बढ़ावा।**

कमजोर, भ्रष्ट तथा गैर जिम्मेदराना न्याय प्रणाली और टैक्स प्रणाली। अनुचित व शिथिल आर्थिक तन्त्र ।

इस प्रकार आतंकवाद का कोई एक निश्चित आर्थिक कारण न होकर अर्थ से सम्बन्धित कमजोरियों का पुंज है।

टोयनबी ने ठीक ही कहा है कि –

''संसार की उन सारी सभ्यताओं और संस्कृतियों का अल्प काल में ही विनाश हो गया जिनकी सभ्यता और संस्कृति का आधार अतिभोगवाद और हिंसा था। ''

राजनैतिक कारण :–

''सभ्यता और मनुष्य के विकास के बाद समाज का जो वर्ग सत्ता के संचालन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भाग ले रहा था, उस वर्ग द्वारा ऐसे वर्ग का हित छिनता आया जिस वर्ग के लोगों ने इनकी शान–शौकत को बढ़ाने में अपना खून–पसीना बहाया''[4]– जब यह चेतना जागी कि हम राजनेता बना सकते हैं, उन्हें साधन सम्पन्न कर सकते हैं, तो खुद राज क्यों नही कर सकते जिससे उन्हें अभी तक कोसों दूर रखा गया था। बस यहीं से शुरूआत होती है असंतोष से उपजे संघर्ष की

और परिणति होती है आतंकवाद में। आतंकवाद के कुछ महत्वपूर्ण राजनैतिक कारण निम्न प्रकार हैं –

- ✔ कमजोर और भ्रष्ट सरकारी तन्त्र, राजनेता एवं व्यवस्था।
- ✔ राजनीतिक अस्थिरता ।
- ✔ एक तन्त्र विशेष (प्रजातंत्र, राजतंत्र तानाशाही आदि)।
- ✔ कमजोर, गैर जिम्मेदराना, अनुभवहीन, निष्प्रभावी और भ्रष्ट नेतृत्व।
- ✔ राजनैतिक भेदभाव
- ✔ विकास कार्यों में राजनैतिक दबाव, भेदभाव, हस्तक्षेप और एक क्षेत्र विशेष की अवहेलना।
- ✔ जन आकांक्षाओं के विपरीत एक राजनैतिक तन्त्र की स्थापना एवं संचालन।
- ✔ अपने राजनैतिक स्वार्थों के लिए राजकीय आतंकवाद का प्रचार–प्रसार और रेडियो, टी.वी. साहित्य आदि का गलत उपयोग।[5]
- ✔ सरकार में राजनैतिक इच्छा शक्ति एवं दूरदर्शिता का अभाव।
- ✔ राजनीतिज्ञों और आम आदमी के बीच बढ़ती दूरी।
- ✔ सरकार और राजनेताओं द्वारा छोटी–छोटी समस्याओं और छोटे–छोटे आंदोलनों की अनदेखी।
- ✔ राजनीति और निजी स्वार्थों की तुलना में देशहित का कम महत्व।
- ✔ कठपुतली सरकारे ंया भ्रष्ट चुनावी प्रक्रिया से चुनी सरकारें।
- ✔ असन्तुष्ट ग्रुपों/राजनीतिक दलों (मुख्यतः क्षेत्रीय दल का विदेशी शक्तियों, सुपर पॉवर्स या दुश्मन पड़ोसी देशों द्वारा फायदा उठाना।

- ✔ कुंठाग्रस्त नौजवानों या समूहों को राजनैतिक शरण, जो कम पढ़े–लिखे लोगों या बेरोजगार युवकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।
- ✔ राजनैतिक एवं वैचारिक मतदभेद।
- ✔ राजनीति का अपराधीकरण और अपराधियों को राजनैतिक शरण एवं शह।
- ✔ प्रजातांत्रिक मूल्यों और अधिकारों के ज्ञान में वृद्वि और राजनैतिक चेतना।
- ✔ अपनेतुच्छ राजनैतिक एवं अन्य स्वार्थों की प्राप्ति के लिए हिंसा के प्रयोग को जायज करार देना।
- ✔ विदेशी शक्तियों या पड़ोसी दुश्मन राष्ट्रों द्वारा राजनैतिक अस्थिरता पैदा करना।
- ✔ एक आंतक संगठन का प्रभाव कम करने एवं राजनैतिक फायदे के लिए दूसरे आतंकवादी संगठन को राजनैतिक प्रश्रय और शरण। फलतः एक कमजोर संगठन का बड़ा और शक्तिशाली स्वरूप सामने आना। पंजाब में भिंडरावाला और असम में उल्फा इसके उदाहरण है।

अगर हम अपनी सांस्कृति धरोहर और पुराने शासकों के विचारों पर ध्यान दें तो उनमें जमीन आसमान का अन्तर पाएंगे और स्वतः ही आतंकवाद के राजनैतिक कारणों के निष्कर्ष पर पहुँच जाएंगे।

August 2015 IJRSS Volume 5, Issue 3 ISSN: 2249-2496

सम्राट अशोक कहा–

''सभी प्रजा मेरी संतान है। जिस प्रकार मैं चाहता हूँ कि मेरी संतति इस लोक परलोक में सब प्रकार की समृद्वि तथा सुख भोगे, ठीक उसी प्रकार मैं अपनी प्रजा की सुख समृद्वि की कामना करता हूँ।''[6]

सामाजिक कारण :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज और आस–पास के सामाजिक परिवेश का उस पर अवश्य प्रभाव पड़ता है। सामाजिक मूल्यों में गिरावट, सामाजिक संस्थाओं का विघटन, वैज्ञानिक प्रगति के कारण पनपता सामाजिक प्रदूषण आदि ऐसे तत्व है जो मनुष्य की हिंसक प्रवृति पर विराम लगाने की बजाय उन्हें बढ़ावा देते है और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ये आंतकवाद के बीज उगा देते है, और फिर उन्हें फलने–फूलने में भी मददगार साबित होते है। कुछ सामाजिक कारण निम्नलिखित है –

– **अमीरी व गरीबी में दिन–पर–दिन बढ़ती खाई।**

– **वैज्ञानिक प्रगति और भौतिकता की ओर अग्रसर युवा वर्ग।**

– **सामाजिक मूल्यों में गिरावट व नैतिक शिक्षा का अभाव।**

– **अपराधियों के छिपने के पर्याप्त एवं सुरक्षित स्थान।**

– **समाज में अपराधियों और अपराधों की अनदेखी करने की प्रवृति।**

– **समाज में अपराधियों का भय तथा सामाजिक चेतना का अभाव।**

– **अति शिक्षा एवं अशिक्षा दोनों के कारण आतंकवाद को बढ़ावा।**

– **वर्ण व्यवस्था एवं छुआछूत।**

– **बुद्विजीवी एवं अभिजात्य वर्गों में हताशा एवं मोहभंग की स्थिति।**

– **सरकार और सरकारी तन्त्र द्वारा बुनियादी सामाजिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने की अक्षमता।**

– **बेरोजगार युवकों को सामाजिक संरक्षण प्राप्त न होना, सरकारी नौकरियों के लिए भाग दौड़ और युवकों की भावनाओं की अवहेलना।**

– **संयुक्त परिवारों का टूटना, बुजुर्गों की अनदेखी तथा सामाजिक अनुशासनहीनता।**[7]

– **शिक्षा का गिरता स्तर जिसमें राष्ट्र–भक्ति, नैतिकता और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा की अनदेखी की जाती है।**

– **धार्मिक कट्टरता से जुड़ी सामाजिक मान्यताएँ और लिंग–वर्ग विशेष की अशिक्षा को सामाजिक मान्यता।**

– **आवागमन के तीव्र उपलब्ध साधन, संचार माध्यमों द्वारा सूचनाओं का समाज के बीचों–बीच तीव्रता से पहुँचने की सुविधा।**

आंतकवाद के विस्तार में यह बड़ा कारण भो सामने आ रहा है जैसा कि लेखकर एवं महान् विचारक श्री सरयू प्रसाद ने अपनी पुस्तक में लिखा है–

''जन्म–संस्कार और कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था समाज को ऊँचे और निचले तबकों में बांटकर रखने तथा लोगों के अलग–अलग सामाजिक दर्जे को बरकरार रखने के लिए पोषित की जा रही थी। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात थी 'छूआछूत' जिसके चलते शुद्व आदमी का दर्जा हासिल नहीं था''[8]

मनोवैज्ञानिक कारण :–

किसी भी तरह की आतंकवादी घटना में मनोवैज्ञानिक कारण का महत्वपूर्ण हाथ होता है। यह दो तरह से काम करता है। क– आतंकवादी का मनोविज्ञान ख– आम आदमी का मनोविज्ञान। ये दोनो की तत्व प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी आन्दोलन की मदद करते है। एक तीसरा मनोवैज्ञानिक कारण जिस पर हम ध्यान नहीं देते वो है पुलिस एवं अन्य सैन्य बलों का मनोविज्ञान। अपने ही इलाकें में, अपने की जानकर लोगों,

रिश्तेदारो आदि के खिलाफ कार्यवाही करने में पुलिस कितनी दुष्प्रेरित और जोशीली होगी– इसको विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं। जब लम्बे समय तक चलने वाले आन्दोलनों से सैन्य बलों में एक 'थकावटी' मनोविज्ञान घर कर जाता है या 'कुछ नहीं हो सकता' वाली मनोवृति जागृत हा जाती है, तो उससे भी आतंकवादी को बल मिलता है और प्रशासन कमजोर होता है।[9] आतंकवाद के चन्द मनोवैज्ञानिक कारण इस प्रकार है–

– **आंतकवादियों द्वारा अपने कार्य को एक पवित्र कार्य के रूप में पेश करना और जनता द्वारा उसे मान लेना।**
– **भावनात्मक अलगाव की भावना।**
– **तीव्र मनोवैज्ञानिक उत्प्रेरणा प्राप्त आत्मघाती दस्ते।**
– **आतंकवादियों में तीव्र भावनात्मक महत्वाकाक्षाएँ।**
– **आपराधिक प्रवृति और भावनात्मक प्रवृति की कमी।**
– **भीड़ इकट्ठी करने का मनोविज्ञान।**
– **स्वतन्त्र होने की इच्छा।**
– **बलपूर्वक गुलाब बनाए गए राष्ट्रो में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न होना।**
– **राष्ट्रीय एकता की कमी।**
– **उपराष्ट्रीयता की भावना।**
– **किसी क्षेत्र या राष्ट्र में धर्म अथवा जाति के आधार पर जनसंख्या का असंतुलन।**
– **किसी क्षेत्र, भाषा, धर्म विशेष आदि की अनदेखी के कारण पनपते असंतोष से नए राष्ट्र की कल्पना।**
– **कट्टरतावाद।**
– **नायक कहलाने अथवा प्रचार पाने की आकांक्षा।**

- **भय का मनोविज्ञान।**
- **हिंसा को सही और अंतिम रास्ता बताना।**
- **अफवाहें और उन पर विश्वास।**
- **प्रेस की भूमिका एवं गलीत प्रचार–प्रसार का आम लोगों पर मनोवैज्ञानिक असर और विश्व जनमत का धीरे– धीरे बनना।**
- **आतंकवादियों में ऐतिहासिक प्रेरणा, विजय की भावना और उसके विपरीत सैन्य बल और प्रशासन में पराजय की भावना पनपना।**

धार्मिक कारण –

मानव जाति यदि धर्मरहित होती तो शायद बड़े स्तर के संघर्ष नहीं होते या फिर बहुत कम होते। विश्व इतिहास गवाह है कि धार्मिक द्वेष के कारण विश्व में अनेक बड़े–बड़े युद्व हुए और हो रहे हैं।

जो मनोवृति हजारों सालों पहले रही, वो आज भी मौजूद है। धर्म के नाम पर लोगों को एक सूत्र में बांधना शायद सबसे आसान काम है। न कोई तर्क–वितर्क, न कोई विचार–विमर्श, बस धर्म का जाप कीजिए और उसकी आड़ में कुछ भी जायज या नाजायज करते रहिए। कुछ धर्म–विशेष इस काम के लिए इतने बदनाम हो गए है कि धर्म के साथ जितनी नैतिकता और अंहिसा को जोड़ा जाना चाहिए, उसके विरूद्व उन्हें हिंसा, अनैतिकता ओर आतंकवाद से जोड़ा जाने लगा है। आज विश्व आतंकवाद के जिस दौर से गुजर रहा है उसमें सबसे बड़ा कारण धर्म है। धर्म एक ऐसी चीज है जिसने क्षेत्र, राष्ट्र, जाति भाषा आदि की सभी सीमाएँ तोड़कर आतंकवाद को नया आयाम दिया है अर्थात् इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया है। आतंकवाद के कुछ प्रमुख धार्मिक कारण निम्न प्रकार है–

- अपने धर्म को सर्वोपरि बताना और गलत तरीकों से उसका प्रचार – प्रसार करना।
- अन्धा धार्मिक कट्टरवाद।
- धर्म का अधूरा ज्ञान और उसकी शिक्षा को तोड़–मरोड़कर आम आदमी तक पहुँचाना।
- अनैतिक कार्यों को धर्म युद्व का नाम देकर करना।
- वास्तविक अर्थों में धर्मनिरपेक्ष राजनीतिज्ञों, क्षेत्रों और राष्ट्रों का अभाव।
- धर्म ओर राजनीति का गठजोड़ स्थापित करना।
- धर्म विशेष का अल्पमत में होने पर उसकी अवहेलना।
- धर्म गुरूओं, पादरियों या मुल्लाओं का वर्चस्व और उनके द्वारा गलत शिक्षा इनके द्वारा धर्मयुद्व, जिहाद, होलीवार आदि की शिक्षा और हिंसा को इसके लिए जायज ठहराने की प्रवृति।
- व्यक्तिगत फायदों एवं राजनैतिक स्वार्थों के लिए धर्म का उपयोग।
- धार्मिक स्थानों का आतंकवादियों द्वारा शरणास्थल के तौर पर उपयोग और सैन्य बलों की इन स्थलों पर कार्यवाही करने की सीमाएँ।
- धार्मिक स्थलों को बेरोक टोक विस्तार और इन्हें रोकने के लिए कानूनों का न होना या कानून होने पर भी प्रशासन द्वारा उनक सख्ती से पालन न करना।
- जन भावनाओं के चलते धार्मिक मामलों में सरकार और प्रशासन की नगण्य भूमिका।[10]

सैन्य कारण :–

आतंकवाद के कारणों में इसे भी एक महत्वपूर्ण कारण माना गया है। अलग से एक कारण के रूप में सैन्य बलों को कटघरे में खड़ा करने के लिए अलग–अलग मत हो सकते है। कई जगह देखा जाए तो एक छोटे से आन्दोलन या संघष्र को सैन्य बलों द्वारा गलत ढंग से सम्भालने के कारण उसका प्रभाव क्षेत्र बढ़ता चला गया। भावनाओं को समझे बिना इसे जितना कुचलने की कोशिश की गई उतनी ही ज्यादो वो भावनाएँ भड़की और एक बड़ी समस्या के रूप में उभरी। आतंकवाद ग्रसित इलाकों में लोगों को भ्रमित करना और भड़काना बड़ा आसान होता है, किन्तु इस पक्ष का समर्थन करने के साथ–साथ इस बात को भी नकारा नहीं जा सकता कि सैन्य बलों द्वारा मानवाधिकारों का पालन न करना और हर आम आदमी को आंतकवादी की श्रेणी में खड़ा कर उसके साथ सख्त व्यवहार करना आग में घी का काम करता है। कुछ एक सैन्य कारण इस प्रकार है –

– **सैन्य बलों पर राजनैतिक प्रभाव।**
– **मानवाधिकारी का ज्ञान न होना और इनका बड़े पैमाने पर हनन ।**
– **सैन्य बलों को अपना काम करने की स्वतत्रंता में कमी।**
– **सैन्य बलों द्वारा मानवाधिकारों के हनन को छिपाना और उनके अपराधों पर पर्दा डालना।**
– **सैन्य बलों द्वारा आम आदमी का शोषण और अनैतिक कार्यवाही।**
– **लम्बे खींचते आन्दोलनो के कारण सैन्य बलों में मानसिक एवं शारीरिक थकान।**
– **सैन्य बलां और आतंकवादियों द्वारा एक दूसरे के विरूद्व की गई कार्यवाहियँ तथा इस क्रम का न रूकना।**
– **सैन्य बलों की संतुलित शक्ति से ज्यादा काम करना।**

– **आतंकवादियों द्वारा सैन्य बलों के परिवारों को निशाना बनाना और उनकी हर उचित कार्यवाही को भी आतंकवादी संगठनों और संचार साधनों द्वारा दुष्प्रचारित करना। फलतः सैन्य बलों में बदले और द्वेष की भावनाओं का पनपना।**[11]

अन्य कारण :–

जटिल प्रौद्योगिकी :–

वर्तमान युग को प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। प्रौद्योगिकी से बहुत सारे चमत्कार किए है। इन चमत्कारों से लोग प्रभावित भी हुए है। प्रौद्योगिकी ने विकास के साथ – साथ विनाश का मार्ग भी प्रशस्त किया है। प्रौद्योगिकी के कारण आधुनिक तकनीकी, परिवहन के साधन तथा संचार के माध्यमों का विकास हुआ है। इसके फलस्वरूप आतंकवादी कार्यों को अंजाम देकर नौ दो ग्याहर होना सुलभ हो गया है। फलतः आतंकवादी प्रौद्योगिकी के विकास का लाभ उठाकर अपने आतंकवादी गतिविधियों को आसानी से अंजाम देते है। वर्तमान समय में तो **'मोबाइल विस्फोट'** की कला भी सुमार में है।[12]

विस्तारवादी नीति :–

वर्तमान युग की दुनियाँ ऐसी हो गई है कि एक देश दूसरे देश का अपना अधिकार जमाना चाहता है। साथ ही वह अपने अधिकार क्षेत्र का विस्तार भी करना चाहता है। इस तरह की विस्तारवादी नीति के कारण आतंकवाद को बढ़ावा मिलता है। कुछ देश ऐसे है, जो अपनी विस्तारवादी नीति के तहत आतंकवादी समूहों एवं संगठनों को आर्थिक एवं नैतिक समर्थन देते हैं एवं दूसरे देशों में आतंक फलाने के लिए हर तरह की मदद करते है। इससे आतंकवादियों का मनोबल बढ़ता है। इसका ज्वलंत उदाहरण भारत में पाकिस्तान द्वारा चलाया जा रहा आतंकवाद है।

नैतिक मूल्यों का ह्मस :—

आज के समय में नैतिक मूल्यों का ह्मस हो गया है। व्यक्ति में व्यक्तिगत भावना की प्रधानता हो गई एवं सामूहिक भावना का लोप हो गया है। लोग नैतिकता या नैतिक मूल्यों को कोई महत्व नहीं देते हैं। फलतः उनका चारित्रिक पतन भी हो गया है। आतंकवादी निर्दोष लोगों की हत्या करते है, स्त्रियों एवं मासूम बच्चों की जान लेते है एवं लड़कियों के साथ बलात्कार करते है। इस तरह के अनैतिक कार्यों को अनैतिक चरित्र वाला व्यक्ति ही अंजाम दे सकता है। आज अनैतिक चरित्रवालों की कोई कमी नहीं है। वे थोड़े से धन के बदले कोई भी कुकृत्य करने को तैयार हो जाते है क्योंकि उनका नैतिक एवं चारित्रिक पतन हो चुका है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नैतिक मूल्यों के ह्मस के कारण आतंकवाद को बढ़ावा मिलता है।

आक्रमण के उन्नत तरीकों का पनपना :—

आज आक्रमण के नए—नए एवं उन्नत तरीकों का ईजाद हो चुका है। विज्ञान ने हमें इतना विकसित कर दिया है कि हम कहीं से बैठकर यंत्रों की सहायता से एक साथ कई जाने ले सकते है। तकनीकी प्रगति के कारण आज प्रक्षेपास्त्र एवं परिष्कृत हथियारों के द्वारा दूर से ही आक्रमण किया जा सकता है। इससे आतंकवादियों का काम और आसान से हो गया है। वे अपने कार्यों को कहीं से अंजाम दे देते हैं। हालांकि आज आतंकवादी अपनी जान की परवाह नहीं करते है इसलिए मानव बमों का प्रयोग भी आतंकवादी हमलों में किया जाता है। पूर्व प्रधानमन्त्री स्व0 राजीव गांधी की हत्या मानव बम द्वारा ही की गई थी।[13] यह आक्रमण उन्नत तरीकों का ही परिणाम कहा जा सकता है।

जनसंख्या वृद्वि :—

आतंकवाद का एक प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्वि को भी माना जा सकता है। जनसंख्या बढ़ने के कारण बेरोजगारों की संख्या में बेतहाशा वृद्वि हुई। जिसके कारण

उनके पास आय का कोई साधन नहीं होता तथा व्यय को रोक नहीं सकते जिससे वे गलत रास्तों की ओर मुड़ जाते है। ऐसे में आतंकवादी संगठनों का काम आसान हो जाता है। वे धन का लालच देकर तथा शासन के प्रति नफरत की भावना पैदा कर उन्हें आतंकवादी बना देते है।[14]

उपनिवेशवाद :—

आधुनिक आतंकवाद का कारण प्रायः औपनिवेशिक प्रशासनों में शासकों द्वारा वर्षों तक अपनाई गई दमनकारी गतिविधियाँ जिसे आतंकवादी गतिविधियाँ कहा जा सकता है और उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप वहाँ जन्में स्वतन्त्रता आन्दोलनों का माना जाता है। प्रायः सभी देशों के स्वतन्त्रता संग्राम में विदेशी शासकों को भगाने के लिए आतंकवादी गतिविधियों का अपनाया गया, लेकिन इस आतंकवादी में आम जनता को लक्ष्य न बनाकर, उसे साथ रखा गया।

महाशक्तियों की स्वार्थ पूर्ति :—

महाशक्तियाँ स्वार्थों की पूर्ति के लिए तथा शक्ति ध्रुवीकरण को अपने पक्ष में करने के लिए आतंकवादी गुटों को गुप्त रूप से सहायता देती है। इस तरह के आतंकवाद का उद्देश्य उस देश विशेष की सरकार को अस्थिर करना होता है इस प्रकार के आतंकवाद में निकारागुआ में 'कोन्ट्रा विद्रोही', फिलीपीन्स के 'एन.पी.ए., अफगानिस्तान के ' मुजाहिदीन' आदि का उल्लेख किया जा सकता है। महाशक्तियाँ इस प्रकार के आतंकवाद का बढ़ाकर अपना वर्चस्व कायम करना चाहती हैं।[15]

अवैध शस्त्र व्यापार एवं आतंकवादियों को विदेशी सहायता :—

वर्तमान में अवैध शस्त्र व्यापार इतना अधिक बढ़ गया हैं कि आधुनिकतम एवं भयानक शस्त्रों को अवैध रूप से प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं रह गया है। विश्व में ऐसे अनेक देश हैं जो आज भी आतंकवादियों को प्रशिक्षण और आर्थिक सहायता उपलब्ध

करवाते हैं। ये दूसरे देशों के आतंकवाद रोकने में सहायता नहीं देते बल्कि दूसरे देशों में अस्थिरता फैलाने के लिए आतंकवादियों को आर्थिक और राजनीतिक सहायता करते है। पाकिस्तान भी भारत में इसी प्रकार आतंक फैलाना चाहता है। जिसके लिए I.S.I लश्कर–ए–तयबा, जैश–ए–मोहम्मद आदि संगठन क्रियाशील है।

न्याय व्यवस्था में विलम्ब –

आतंकवाद का एक प्रमुख कारण न्यायिक व्यवस्था को भी माना जा सकता है। न्याय व्यवस्था भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, आतंकवाद, जालसाजी जैसे मुकदमों में अनेक वर्ष लगता देती है। जिससे आतंकवादी निर्भीक होकर अपना कार्य करते रहते हैं। कई बार तो आतंकवादी की प्राकृतिक मृत्यु के बाद न्यायालयों द्वारा फैसले सुनाए जाते है। इस कारण कुछ संगठन इस कार्य हेतु बुजर्गों का भी सहारा लेते है।

भ्रष्टाचार :–

विश्वभर में भ्रष्टाचार का बोल–बाला है। नवयुवक वर्ग राजनीतिज्ञों, उच्च नौकरशाहों, व्यापारियों और उद्योगपतियों के आचरण को देखकर अपना धैर्य खो देते है। उच्च स्तर के पदाधिकारी रिश्वत और भ्रष्टाचार तथा जालसाजी में लिप्त नजर आते हैं। ये सभी कारण आतंकवाद को बढ़ाने का प्रयास करते है।[16]

संदर्भ सूची

1. दैनिक भास्कर, 14 अक्टूबर 2008, प्रीतिश नंदी, ''असहिष्णुता और आतंकवाद'' पृष्ठ–6
2. जनसता, 12 सितम्बर 2001, पृष्ठ–1
3. प्रो.धर्मचन्द जैन, डॉ.आलोक श्रीवास्तव, ''भारतीय सामाजिक व्यवस्था'', पृष्ठ–198, यूनिवर्सिटी बुक हाऊस, जयपुर– 2006
4. दैनिक भास्कर, 22 मई, 2008 उज्जवल चौधरी, ''सामूहिक प्रयास से ही मिटेगा आतंकवाद'', पृष्ठ–6
5. सहगल वी.पी.सिंह, ''ग्लोबल टैररिज्मः सोशियो पॉलिटिको एण्ड लीगल डायमेंशन'' दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, न्यू देहली, 1995
6. मनोहर लाल बाथम, शिवचरण विश्वकर्मा, ''आतंकवाद चुनौती और संघर्ष'' पृष्ठ 61–64, प्रकाशक मेधा बुक्स नवीन शाहदरा, दिल्ली–2008
7. डॉ. सुनील कान्त भट्टाचार्य, ''भारत की सामाजिक समस्याएँ, मुद्दे और परिपेक्ष्य'' राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली– 2008
8. दैनिक भास्कर, 22 मई 2008, पृष्ठ– 1
9. हेण्डरसन हैरी : ''ग्लोबल टैररिज्म'' जैको पब्लिकेशन, मुम्बई, 2003
10. डॉ. आर.एन.त्रिवेदी, डॉ.एम.पी. राय, ''भारतीय सरकार एवं राजनीति'', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर–2005
11. मनोहर लाल बाथम, शिवचरण विश्वर्मा, ''आतंकवाद चुनौती और संघर्ष'' मेधा बुक्स नवीन शाहदरा, दिल्ली– 2008
12. राजस्थान पत्रिका, 14 मई 2008, पृष्ठ–1

13. राजस्थान पत्रिका, राकेश वर्मा, निलेश कुमार, ''दहशत की जमीन पर फिदायीन'' 6 जनवरी, 2008, पृष्ठ – 8

14. डॉ. गणेश पाण्डेय, ''अपराध शास्त्र'', पृष्ठ– 336, 337, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली – 2009

15. डॉ. रूपा मंगलानी, ''भारतीय शासन एवं राजनीति'', पृष्ठ–513, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर–2007

16. डॉ. एस.सी.सिंहल, ''भारत की विदेश नीति'', पृष्ठ–387, प्रकाशक लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा– 2006–07